कर्मफल

हम जो कुछ भी करते हैं उसमें तीन स्तर शामिल होते है। वे कर्ता, कर्म कर्मफल हैं। सामान्य तौर पर ज्यादातर लोग, कर्मफल पर ध्यान केंद्रित करते है। केवल काम करने से उन्हें संतुष्टि नहीं मिलती। वे अंत में मिलने वाला फल को वास्तविक मूल्य देते है। इस वजह से, काम सिर्फ माध्यम बन जाता है और यह केवल अंत में मिलने वाला फल पर निर्भर करता है। ये लोग केवल कुछ हासिल करने के लिए काम करते है, लेकिन वे खुशी और आनंद के साथ काम नहीं करते है।

इसका मतलब, यहाँ कर्ता पिछले विचारों को पकड़के रहता है, काम वर्तमान में रहता है, और कर्मफल भविष्य में रहता है। क्योंकि कर्ता या जीवात्मा यहां तीन बागों में विभाजित होने की वजह से, काम बोझ बन जाता है, और आप किसी भी तरह काम को पूरा करने की कोशिश करेंगे। क्योंकि अंत में आने वाला फल ही प्राप्त करन है। अगर आप फल, बिना काम किए प्राप्त कर सकते है, तो आप कभी भी काम नहीं करेंगे।

यही कारण है कि आत्मज्ञानी, अपेक्षा के बिना काम करने के लिए कहते है। क्योंकि केवल काम पर ध्यान केंद्रित करना, उसे खुशी से करना, और इससे उत्पन्न होने वाली सुख-दुख को भगवान के प्रसाद मानकर अनुभव करने से, रचनात्मकता उन कार्यों में प्रकट होगा, और आप अविश्वसनीय चीजें सृष्टी कर सकते हैं। इसके कारण स्वाभाविक रूप से स्वयं ही आपको कर्मफल प्राप्त होगा, भले ही आपको कोई उम्मीद न हो। क्यों कि आप कार्य करते समय में ही आनंद का अनुभव करने का कारण, कर्मफल के प्रति आकर्षण स्वाभाविक रूप से कम हो जाता है। क्यों कि फल प्राप्त करने के बाद जो आनंद मिलता है वह काम करते समय में ही आएगा।

उदाहरण के लिए अष्ट-चम्मा (बोर्ड गेम जो चार कौड़ी के गोले फेंककर खेला जाता है) खेलते समय, मान लीजिए कि, आपको गेम जीतने के लिए दो पॉइंट चाहिए। कोई भी गारंटी नहीं दे सकता है कि, आपको हमेशा आवश्यक संख्या मिलती है। लेकिन मान लीजिए अगर आपको चार कौड़ी के गोले से मदद मिली तो, आपके अपेक्षित अंक मिलने की संभावना है। जब दो गोले उलटे होते हैं और दो सीधी होती है, तो आपको 2 अंक मिलते हैं। मतलब जब गोले फेंके जाते हैं, तो पांच परिणाम संभव हैं, अर्थात् 1, 2, 3, 4 और 8. यदि आपको 2 अंक मिले तो, आप ही जीतते है, और यदि शेष चार संभावनाएं होती हैं तो आप खेल को खो देंगे। इसका मतलब, जब आप शेष चार परिणाम से सहायता प्राप्त करते हैं, तो आप जीत जाते हैं। मतलब आप तभी जीतते है, जब आपको असफलता से मदद मिलती है, अन्यथा आप खेल को खो देंगे।

इसलिए मैं आपको सफलता-विफलता, राग-द्वेश से परे जाने के लिए कह रहा हूं। क्योंकि इस खेल समाप्त होने तक आपको चार गोले की और पाँच मौकों की मदद की ज़रूरत होती है। इसे समझने के बाद, जब भी आप गोले फेंकते हैं, तो आप हर बार शेष परिणाम से

मदद का अनुरोध करना है। लेकिन अगर यह आपकी उम्मीद के अनुसार नहीं हुआ, तो परिणाम से नफरत न करें। स्नेह के साथ दर्द और असफलता का अनुभव करें, और सफलता और असफलता के प्रति समानता प्राप्त करें।

एक और उदाहरण: क्रिकेट खेल में अगर बल्लेबाज यह उम्मीद करता है कि, गेंदबाज 100 के.एम. की गति से गेंद फेंकता है; यदि वह उसी गति से फेंकता है तो वह ठीक से खेलेंगे, अन्यथा वह ठीक से नहीं खेलेंगे। यहां अपेक्षा और कल्पना के कारण वह गेंद को देखने और ठीक से खेलने में असमर्थ हो गया। मान लीजिए कि अगर वह बिना किसी उम्मीद के शुद्ध है, या अगर वह पहले से ही सभी प्रकार की गेंदों का सामना करने के लिए तैयार है, तो वह गेंद को सही ढंग से देखेगा और ठीक से हिट करेगा।

चूँकि काम करते समय आपने भी: विश्वास, निश्चित राय, अपेक्षाएँ और कल्पनाएँ पकड़ के रखा हैं, दिमाग में इससे संबंधित विचार चलने की वजह से, आप देख नहीं सकते वास्तव में क्या हो रहा है। इस कारण आप वर्तमान क्षण में नहीं रहते। इसलिए काम करते समय और दूसरों से निपटते समय, उम्मीदों के बिना रहें या हर संभावना की उम्मीद करें। फिर जो भी व्यवहार होगा, आप उसी के अनुसार प्रतिक्रिया देंगे। इस तरह अगर आप गहराई से सोचेंगे, तो आपको पता चलेगा कि हर काम में, हर संभावना की मदद आपको जरूरत होती है।

यदि आप प्रतिकूल फल को द्वेष करेंगे, तो भी परिणाम आएंगे। लेकिन प्रतिकूल फल से डर वैसा ही रहेगा। अगर आप असफलता या बीमारी या क्रोध या अन्य बुरे गुणों से नफरत करते हैं या दबाते हैं, तो भी आपको सफलता या स्वास्थ्य या शांति मिल सकती है। लेकिन आपको तनाव होगा कि, ये प्रतिकूल परिस्थितियां आपको परेशान करने के लिए, फिर से आ सकता है। लेकिन यदि आपको असफलता, बीमारी या क्रोध की मदद से सफलता, स्वास्थ्य या शांति मिलती है, तो व्यतिरेक या विरोधियों के बीच दुश्मनी गायब होकर, दोस्ती शुरू होगा।

कर्म

कर्म का अर्थ है काम, कुछ करने के लिए चुनना, इससे उत्पन्न होने वाली सुख-दुख का अनुभव करना। दैनिक जीवन में तीन तरह के कर्म: यानी तमो, रजो और सत्व गुण कर्मों की आवश्यकता होती है। स्थिति के अनुसार आपको तीनों कर्मों का उपयोग करना होगा। तो आपको इन तीनों के प्रति समान भाव पाने के लिए साधना करनी होगी। इसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए, "राग-द्वेश, आंतरिक यात्रा" विषय पढ़ें।

लेकिन कुछ लोग कर्म करने से डरते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि कर्मफल उन्हें बांध देंगे। लेकिन कर्म योगी इस अजीबोगरीब स्थिति से, आसानी से बाहर निकलते है। वह कर्मों को नहीं, कर्मफल को त्याग करता है। उसका कर्तव्य: अनुभव ज्ञान प्राप्त करना, उस ज्ञान के साथ वह सूर्य की तरह प्रकाशित होना और इसे सभी के लिए फैलाना, यदि अवसर मिले तो वह अनुभव ज्ञान दूसरों को बांटना। वह इस ब्रह्मांड में रहता है, लेकिन एक संत की तरह। वह सभी काम करता है लेकिन उनमें कोई भी उम्मीद नहीं होगा। उसे अपने बच्चों से या लोगों से कोई अपेक्षा नहीं रहता है। वह स्वयं संत के रूप में अनुभव करता है, लेकिन इस दुनिया को

पारिवारिक व्यक्ति की तरह लाभ करेगा। वह हर चीज से बचने की कोशिश नहीं करेगा, लेकिन हर चीज में, कमल के पत्ते पर पानी के बूंद जैसा रहेगा। इसका मतलब है कि वह हर चीज में पूरी तरह से भाग लेता है, लेकिन वह किसी भी चीज से बंधित नहीं होगा।

कर्ता

अधिकांश लोग लगातार काम किए बिना नहीं रह सकते। शरीर, मन और हृदय से परे जाकर, कम से कम दस मिनट तक, काम किए बिना, आराम से अकेले नहीं रह सकते। वे जानबूझकर कुछ काम बनाकर, अपने दैनिक जीवन बिताते है। यहां टी.वी देखना, हमेशा बैठके सोचना भी, काम ही है।

कब, किसको, कितनी सेवा करें; केवल उतना ही मदद करनी चाहिए, तब तक बिना कुछ किए तटस्थ रहें। लेकिन ज्यादातर लोग कुछ किए बिना नहीं रह सकते। इसलिए वे अनावश्यक मामलों में शामिल होकर, समस्याएं पैदा करते हैं। उन्हें लगता है कि वे काम कर रहे हैं, लेकिन यहां समझना होगा कि, वे काम नहीं कर रहे हैं, खुद काम उन पर आधिपत्य अधिकार चला रहा है। काम करने का यह सही समय है या नहीं, वह तय नहीं करते। क्योंकि वे कुछ किए बिना नहीं रह सकते।

लेकिन योगी किस प्रकार के कार्य कर रहा है, इस कार्य के माध्यम से क्या फल मिलेगा, इसकी परवाह नहीं करते है, वह केवल कर्म पर अधिकार रखने की कोशिश करता है। अनिवार्य रूप से कर्म करने की स्थिति से अतीत जाकर, कब कर्म करना है, वह स्वयं निर्णय लेगा। राग-द्वेष से परे जाने के बाद ही, वह काम करने के लिए हाँ कहेगा। क्योंकि जो खुशी किसी चीज पर निर्भर नहीं होती, वह उसकी अपनी हो जाती है। इसलिए वह उस आनंद पर निर्भर नहीं होगा, जो कर्म करने और कर्मफल के माध्यम से आता है। अतीत स्थिति को पहुंचे तो आप भगवान के साथ एकजुट होंगे, इसे हम "योगम" कहते हैं। वह जानता है कि, इस अवस्था में जो भी होगा वह दिव्य हो जाता है, और निश्चित रूप से दिव्य फल भी प्राप्त होता है। इस वजह से, उसके साथ समस्त सृष्टि विकसित होकर विश्व-कल्याण भी होता है।

योगम में जो कुछ भी होता है, या ईश्वर तक पहुँचने के लिए या ईश्वर के गुणों को विकसित करने के लिए जो भी आप करते हैं, उसके द्वारा उत्पन्न होने वाला कर्मफल आपको बांधता नहीं है। न केवल नए कर्म बांदेग, बल्कि पुराने कर्म भी पिगल जाता है। लेकिन त्रिगुणों के बीच, यदि आप एक को चुनके शेष दो से द्वेष करते हैं, तो यह कर्म बन जाता है। इस वजह से पाप-पुण्य संस्कार आपसे चिपका रहता है।

उदाहरण के लिए, भगवान के साथ रहके, युद्ध मे बहुत लोगों को मारने के बाद भी, अर्जुन को मुक्ति मिला। लेकिन देश की रक्षा के लिए अगर सैनिक बदला लेने के लिए लड़ते हैं, तो कुछ लोगों की मृत्यु हो जाती है। इसका मतलब है कि, अच्छा करे तो बुरा हो रहा है, लेकिन अर्जुन के मामले में भले ही उसने बुरा किया, लेकिन उसे मोक्ष मिल गया। हम यह समझ सकते हैं कि, कर्मफल कार्यों के आधार पर नहीं बनते, बल्कि आप किस इरादे से कर्म

कर रहे है, उस पर निर्भर होता है कर्मफल। इसलिए अत्यावश्यक कार्यों को छोड़कर, बाकि कर्म राग-द्वेष से परे जाकर ही, कर्म करने का प्रयास करें।

प्रार्थना

अगर आप राग-द्वेश से परे जाते हैं, तो किसी भी चीज के पीछे भागने की जरूरत नहीं होगी। क्योंकि अंदर कोई गमन नहीं होगी, केवल मौन की चेतना रहेगी। इस चेतन अवस्था में रहना ही, प्रार्थना का अर्थ है। इसका मतलब, आप काम करेंगे, लेकिन फल की उम्मीद नहीं होगी। इस वजह से काम, आनंदमय खेल या नाटक की तरह हो जाता है, बिना पागलपन या गंभीरता के।

जिस व्यक्ति को फल की उम्मीद है, और जो व्यक्ति काम किए बिना नहीं रह सकता, वह खुशी से खेल नहीं सकता। यदि वह कोई गेम खेलते हैं, तो इतना गंभीरता से खेलेगा की, वह खेल को भी काम जैसा परिवर्तन करेगा। लेकिन जिस व्यक्ति के पास वास्तविक शांत दिमाग है, वह काम को भी मजेदार खेल की तरह परिवर्तन करेगा। आप केवल तभी खेल सकते हैं जब कोई अपेक्षा न हो; इसके माध्यम से अगर आपको कुछ नहीं मिलता, तो भी आपको कोई असंतोष महसूस नहीं होगा, क्योंकि काम करते समय में ही, आपको आनंद और संतुष्टि मिलेगी।

यही कारण है, बडे लोग जो योगम में नहीं है, वे खेल को खुशी से नहीं खेल सकते। केवल बच्चे किसी अपेक्षा के बिना खेल सकते हैं। यही कारण है, मासूमियत और सुंदरता उनके खेल में बनी रहती है। उनकी खुशी के लिए सिर्फ खेलना ही काफी है। वह खेल के दौरान, पूरी तरह से खेल में शामिल होगा, क्योंकि वह हमेशा भगवान के साथ एकजुट रहता है। अगर वह महसूस कर रहा है कि, "भगवान अलग है, मैं अलग हूं", तो वह भी खेल में पूरी तरह से भाग नहीं ले सकता।

बच्चे को खेल के माध्यम से किसी भी फल की उम्मीद नहीं रहती, वह इधर-उधर दौड़ता है। यहां तक कि कुछ की उम्मीद करने वाला छोटा सा चैतन्य हिस्सा, पीछे किसी चीज का इंतजार नहीं करता। पूरी चैतन्य खेलमे भाग लेगा। वर्तमान में रहकर, बच्चा पूरी तरह से इसमें भाग लेकर, खुद खेल बन जाता है। इस तरह काम करना ही, बिना अपेक्षा के करना है। इसलिए आप भी अपने दैनिक जीवन में पूरी तरह से भाग लेकर, सभी कार्य करने का प्रयास कीजिए।

कार्यों या उसके कारण को रोकना ही प्रार्थना है। अर्थात कर्म फल को छोड़ना ही प्रार्थना है। इस प्रार्थना का उद्देश्य, छोटा लड़का बनना, जो शुद्ध और बोला होता है। केवल तभी आपने वास्तविक प्रार्थना की है। तब आपकी प्रार्थना को अस्वीकार करना असंभव है। फिर प्रार्थना की आवश्यकता के बिना भगवान भीतर प्रवेश करेगा, क्योंकि आपने आवश्यक स्थिति सृष्टि किया है। परमात्मा तुम्हारे सामने प्रकट होगा, क्योंकि आप राग-द्वेष से परे हो।

इसलिए सिर्फ खाना खाएं लेकिन स्वास्थ्य या बीमारी की उम्मीद न करें। खाना बनाते समय, अच्छी तरह से पकाने की उम्मीद नहीं रखो। काम करो लेकिन उम्मीद मत करो कि,

आपको इसके माध्यम से पैसा मिलेगा। जब आप उम्मीद करेंगे, तब आप वही करेंगे जो आप जानते हैं, कुछ नया करने की कोशिश नहीं करेंगे। कुछ नया करके, भविष्य में क्या होगा वह भगवान पर छोड़ो। लेकिन शुरू में आप अपेक्षा के साथ काम करेंगे, यह गलत नहीं है। इसे भी स्वीकार करो और साधना करते रहो। फिर निश्चित रूप से एक दिन आप, एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाएंगे, जहाँ आप बिना किसी अपेक्षा के काम करेंगे। यदि आप इच्छाओं से परे जाते हैं, मतलब राग-द्वेश से परे जाते है, तो आपकी गतिविधियाँ रुक जाती है, और जब आपकी गतिविधियाँ रुक जाती है, तो आपका मिलन वर्तमान क्षण के साथ होगा। इस मिलन के कारण, परमात्मा तक पहुंचने का द्वार खुलेगा।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें http://darmam.com/library.html

दान

न्यूएनर्जी-अद्वैत ज्ञान से प्रेरित कोई व्यक्ति या कोई भी, दान करना चाहता है, तो कृपया निम्नलिखित बैंक खाते में पैसा जमा करें। आपकी मदद हमें इस ज्ञान को बहुत सारे लोगों तक फैलाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। Name: P.Sreedhar; SBI Bank A/c No: 30603897922. Branch: Hanamkonda; City: Hanamkonda, Warangal District, India. IFSC Code: SBIN0003422 Mobile No: 9390151912. आपकी उदारता और समर्थन की सराहना की जाती है! This mobile No. also has GooglePay and PhonePe.

पिघलजाओ

यदि आप अपने भाग: शरीर, मन और ह्रदय से परे जाकर आत्मा तक पहुंचना चाहते हैं, तो पहले यह पहचान लें कि, आप उनसे प्रभावित हैं और उनमें कैद होकर रह रहे हैं। उसके बाद अपना ध्यान अपने भागों से बदल के स्वयं पर लगाएँ, और फिर पिघलने का अभ्यास करें। जो कुछ भी होता है, इस प्रक्रिया में भाग लेने के बिना, आप अंदर जप करें कि, "केवल मैं पिघल रहा हूँ", और बर्फ के घन की तरह पिघल कर शुद्ध हो जाओ। इसके बाद अंदर फैल जाओ। बिना बात के, बिना सोचे समझे, बिना कुछ करते हुए, केवल इस भावना में रहना है कि मैं पूरे शरीर में मौजूद हूं। फिर आप नींद की स्थिति में प्रवेश करेंगे, या अपने भागों से बाहर आकर खाली जगह में रहेंगे। इस स्थिति में यदि आप कुछ समय के लिए रह सकते हैं, तो विचार अपने आप ही पिघल जाते हैं और मौन अंदर रहेगा, और उसके बाद आत्मा प्रकट होगा। तब आप सुखदता, हल्कापन, ताजगी और आनंद का अनुभव करेंगे। अपनी आँखें तुरंत खोले बिना, इस आनंद को अपने सभी भागों में फैलाएँ। तब आपको सभी समस्याओं का समाधान मिल जाएगा। साथ ही आपके सभी भागों के बीच समन्वय होगा। इस ध्यान का अभ्यास कोई भी, कभी भी, कहीं भी, और बिना समय सीमा के, किया जा सकता है। इस ध्यान को रोजाना कम से कम 10 मिनट तक अभ्यास करें।